



Mr.vivek gadhwi

31 Mar 1998

04:45 PM

Khedbrahma

Model: All-Dosha-Report

Order No: 119690601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 31/03/1998
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 16:45:00 घंटे
इष्ट _____: 25:33:42 घटी
स्थान _____: Khedbrahma
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:03:00 उत्तर
रेखांश _____: 73:03:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:37:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:07:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:16 घंटे
साम्पातिक काल _____: 04:41:43 घंटे
सूर्योदय _____: 06:31:31 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:53:02 घंटे
दिनमान _____: 12:21:31 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 16:42:37 मीन
लग्न के अंश _____: 18:20:50 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: कृतिका - 3
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: प्रीति
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: उ-उदय
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1920	चैत्र	10
पंजाबी	संवत : 2054	चैत्र	18
बंगाली	सन् : 1404	चैत्र	17
तमिल	संवत : 2054	पंगुनी	17
केरल	कोल्लम : 1173	मीनम	17
नेपाली	संवत : 2054	चैत्र	18
चैत्रादि	संवत : 2055	चैत्र	शुक्ल 4
कार्तिकादि	संवत : 2055	चैत्र	शुक्ल 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
 तिथि समाप्ति काल _____ : 18:50:55
 जन्म तिथि _____ : 4
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:30:19 घंटे
 जन्म योग _____ : कृतिका
 सूर्योदय कालीन योग _____ : प्रीति
 योग समाप्ति काल _____ : 26:44:40 घंटे
 जन्म योग _____ : प्रीति
 सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
 करण समाप्ति काल _____ : 08:15:57 घंटे
 जन्म करण _____ : विष्टि
 भयात _____ : 28:07:25
 भभोग _____ : 55:00:44
 भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 2 वर्ष 10 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____ : मार्गशीर्ष
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : हस्त
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : शकुनि
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सर्प
 लग्न _____ : वृष
 सूर्य _____ : वृश्चिक
 चन्द्र _____ : कन्या
 मंगल _____ : धनु
 बुध _____ : कन्या
 गुरु _____ : मकर
 शुक्र _____ : मकर
 शनि _____ : तुला
 राहु _____ : मकर

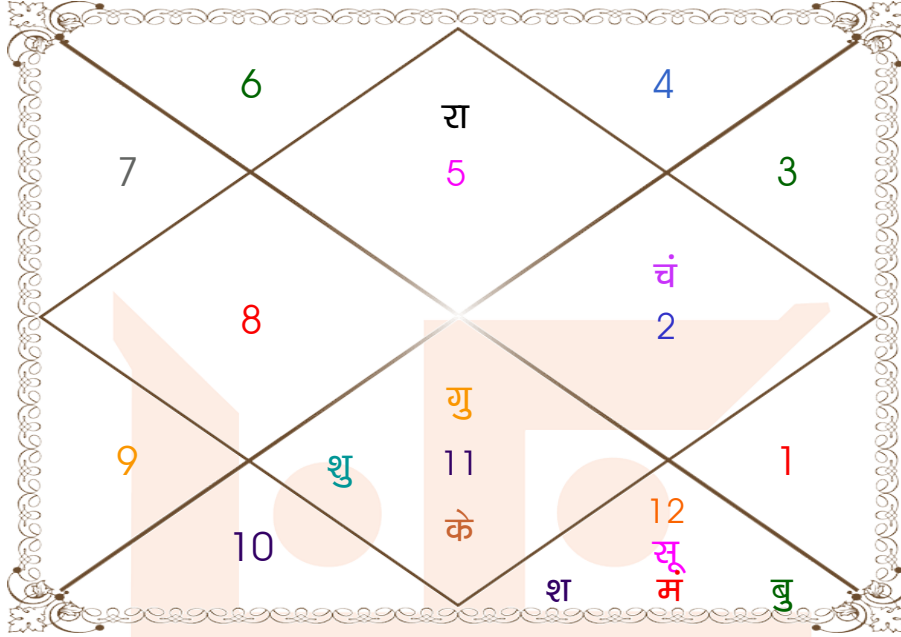


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

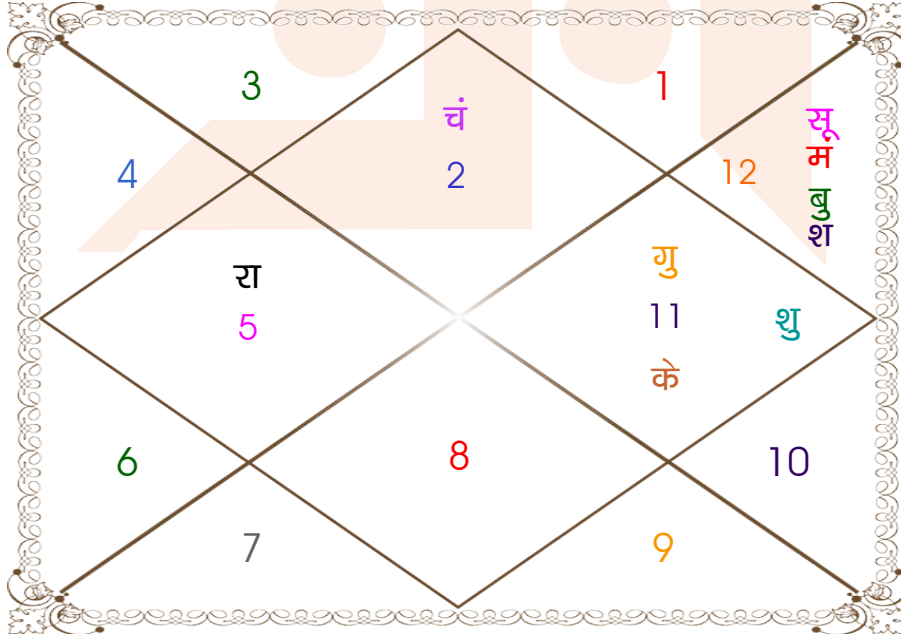


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

बु सू म श		चं	
के गु शु			
			रा ल

लग्न कुंडली

चं		बु सू म श	श
		के गु शु	
ल रा			

विंशोत्तरी
सूर्य 2वर्ष 10मा 29दि
सूर्य

31/03/1998

01/03/2115

सूर्य	27/02/2001
चन्द्र	28/02/2011
मंगल	27/02/2018
राहु	28/02/2036
गुरु	28/02/2052
शनि	28/02/2071
बुध	28/02/2088
केतु	28/02/2095
शुक्र	01/03/2115

योगिनी
उल्का 2वर्ष 10मा 29दि
भामरी

27/02/2022

27/02/2026

भामरी	09/08/2022
भद्रिका	28/02/2023
उल्का	29/10/2023
सिद्धा	08/08/2024
संकटा	29/06/2025
मंगला	08/08/2025
पिंगला	29/10/2025
धान्या	27/02/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



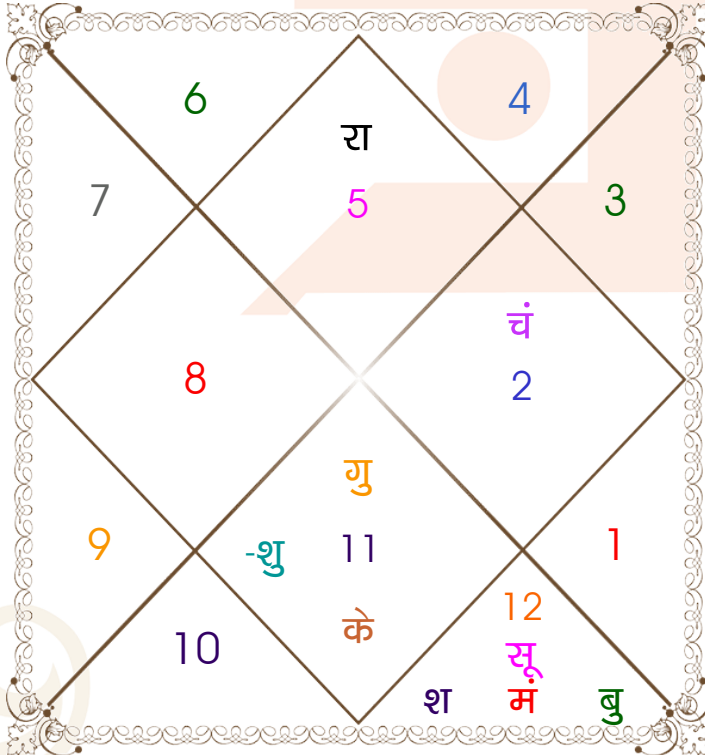
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	18:20:50	326:55:07	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	---
सूर्य			मीन	16:42:37	00:59:16	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			वृष	03:31:37	14:32:26	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण
मंगल		अ	मीन	26:42:33	00:45:27	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	मित्र राशि
बुध		व	अ	मीन	26:52:31	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	नीच राशि
गुरु			कुंभ	19:14:04	00:13:38	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	सम राशि
शुक्र			कुंभ	00:15:45	01:00:33	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मित्र राशि
शनि		अ	मीन	27:52:22	00:07:31	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	सम राशि
राहु		व	सिंह	16:21:48	00:03:49	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि
केतु		व	कुंभ	16:21:48	00:03:49	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	18:01:07	00:02:12	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
नेप			मक	08:01:02	00:01:06	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो		व	वृश्चि	14:07:05	00:00:40	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			वृष	18:06:13	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	बुध	--

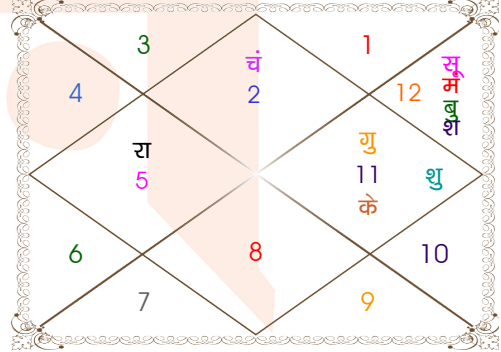
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:50

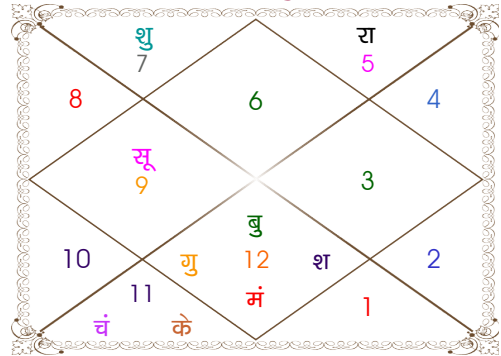
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 03:18:24	सिंह 18:20:50
2	कन्या 03:18:24	कन्या 18:15:58
3	तुला 03:13:32	तुला 18:11:06
4	वृश्चिक 03:08:39	वृश्चिक 18:06:13
5	धनु 03:08:39	धनु 18:11:06
6	मकर 03:13:32	मकर 18:15:58
7	कुम्भ 03:18:24	कुम्भ 18:20:50
8	मीन 03:18:24	मीन 18:15:58
9	मेष 03:13:32	मेष 18:11:06
10	वृष 03:08:39	वृष 18:06:13
11	मिथुन 03:08:39	मिथुन 18:11:06
12	कर्क 03:13:32	कर्क 18:15:58

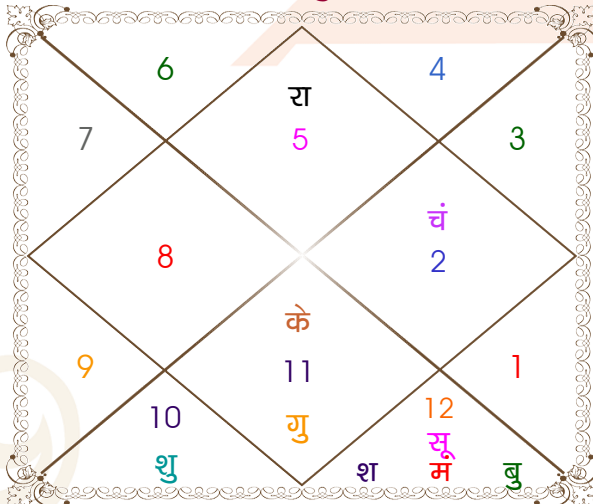
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह 18:20:50	
2	कन्या 16:13:31	
3	तुला 16:43:43	
4	वृश्चिक 18:06:13	
5	धनु 19:05:11	
6	मकर 19:19:02	
7	कुम्भ 18:20:50	
8	मीन 16:13:31	
9	मेष 16:43:43	
10	वृष 18:06:13	
11	मिथुन 19:05:11	
12	कर्क 19:19:02	

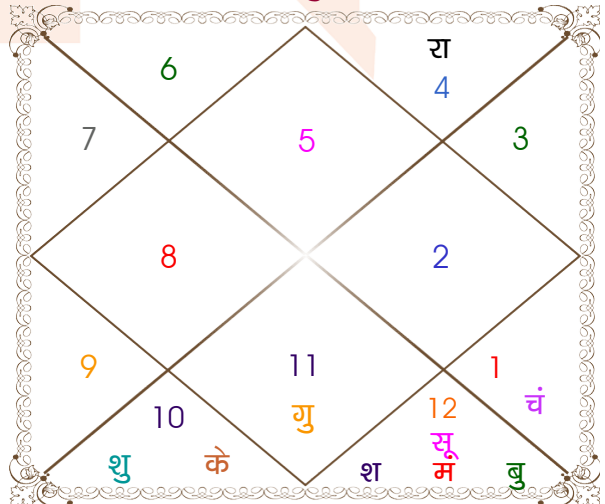
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



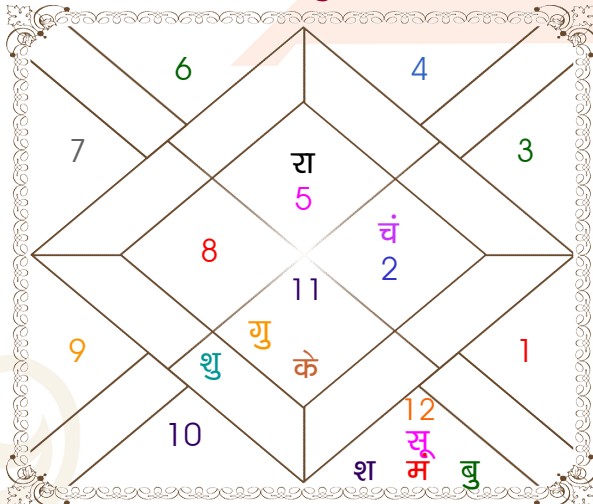
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	युवा मुदित नेत्रपाणि 11.61 41 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	मृत स्वस्थ भोजन 17.95 81 %
मंगल	भातृ	भातृ	बाल विकल आगमन 0.00 51 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	बाल विकल भोजन 0.00 38 %
गुरु	मातृ	धन	वृद्ध शान्त भोजन 2.06 66 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	बाल मुदित नेत्रपाणि 7.30 39 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल विकल आगमन 0.74 36 %
राहु	---	ज्ञान	युवा खल गमन 0.00 13 %
केतु	---	मोक्ष	युवा खल भोजन 0.00 13 %
कुल			39.66

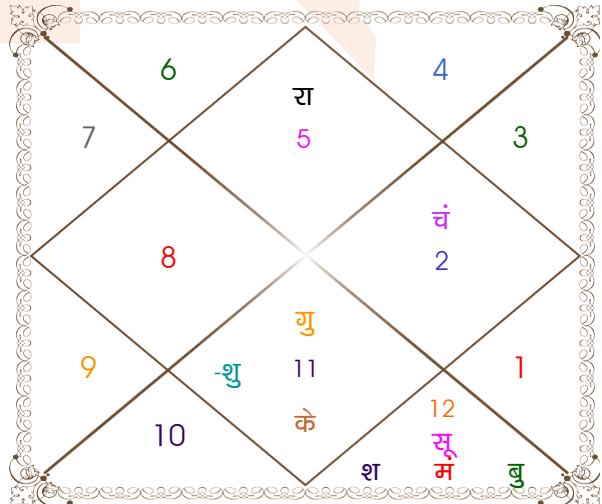
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 10 मास 29 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
31/03/1998	27/02/2001	28/02/2011	27/02/2018	28/02/2036
27/02/2001	28/02/2011	27/02/2018	28/02/2036	28/02/2052
00/00/0000	चंद्र 28/12/2001	मंगल 27/07/2011	राहु 10/11/2020	गुरु 17/04/2038
00/00/0000	मंगल 30/07/2002	राहु 13/08/2012	गुरु 05/04/2023	शनि 28/10/2040
00/00/0000	राहु 28/01/2004	गुरु 20/07/2013	शनि 09/02/2026	बुध 03/02/2043
00/00/0000	गुरु 29/05/2005	शनि 29/08/2014	बुध 28/08/2028	केतु 10/01/2044
31/03/1998	शनि 29/12/2006	बुध 26/08/2015	केतु 16/09/2029	शुक्र 10/09/2046
शनि 17/12/1998	बुध 29/05/2008	केतु 22/01/2016	शुक्र 16/09/2032	सूर्य 29/06/2047
बुध 23/10/1999	केतु 28/12/2008	शुक्र 23/03/2017	सूर्य 10/08/2033	चंद्र 28/10/2048
केतु 28/02/2000	शुक्र 29/08/2010	सूर्य 29/07/2017	चंद्र 09/02/2035	मंगल 04/10/2049
शुक्र 27/02/2001	सूर्य 28/02/2011	चंद्र 27/02/2018	मंगल 28/02/2036	राहु 28/02/2052
शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
28/02/2052	28/02/2071	28/02/2088	28/02/2095	01/03/2115
28/02/2071	28/02/2088	28/02/2095	01/03/2115	00/00/0000
शनि 03/03/2055	बुध 26/07/2073	केतु 26/07/2088	शुक्र 29/06/2098	सूर्य 18/06/2115
बुध 10/11/2057	केतु 23/07/2074	शुक्र 25/09/2089	सूर्य 29/06/2099	चंद्र 18/12/2115
केतु 20/12/2058	शुक्र 23/05/2077	सूर्य 31/01/2090	चंद्र 28/02/2101	मंगल 24/04/2116
शुक्र 18/02/2062	सूर्य 30/03/2078	चंद्र 01/09/2090	मंगल 30/04/2102	राहु 18/03/2117
सूर्य 31/01/2063	चंद्र 29/08/2079	मंगल 28/01/2091	राहु 30/04/2105	गुरु 05/01/2118
चंद्र 01/09/2064	मंगल 25/08/2080	राहु 16/02/2092	गुरु 30/12/2107	शनि 01/04/2118
मंगल 10/10/2065	राहु 15/03/2083	गुरु 22/01/2093	शनि 01/03/2111	00/00/0000
राहु 16/08/2068	गुरु 20/06/2085	शनि 02/03/2094	बुध 29/12/2113	00/00/0000
गुरु 28/02/2071	शनि 28/02/2088	बुध 28/02/2095	केतु 01/03/2115	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 2 वर्ष 11 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि 05/04/2023 09/02/2026	राहु - बुध 09/02/2026 28/08/2028	राहु - केतु 28/08/2028 16/09/2029	राहु - शुक्र 16/09/2029 16/09/2032	राहु - सूर्य 16/09/2032 10/08/2033
शनि 17/09/2023 बुध 11/02/2024 केतु 12/04/2024 शुक्र 03/10/2024 सूर्य 24/11/2024 चंद्र 18/02/2025 मंगल 20/04/2025 राहु 23/09/2025 गुरु 09/02/2026	बुध 21/06/2026 केतु 14/08/2026 शुक्र 17/01/2027 सूर्य 04/03/2027 चंद्र 21/05/2027 मंगल 14/07/2027 राहु 01/12/2027 गुरु 03/04/2028 शनि 28/08/2028	केतु 20/09/2028 शुक्र 23/11/2028 सूर्य 12/12/2028 चंद्र 13/01/2029 मंगल 04/02/2029 राहु 03/04/2029 गुरु 24/05/2029 शनि 24/07/2029 बुध 16/09/2029	शुक्र 18/03/2030 सूर्य 11/05/2030 चंद्र 11/08/2030 मंगल 14/10/2030 राहु 27/03/2031 गुरु 20/08/2031 शनि 10/02/2032 बुध 14/07/2032 केतु 16/09/2032	सूर्य 02/10/2032 चंद्र 30/10/2032 मंगल 18/11/2032 राहु 06/01/2033 गुरु 19/02/2033 शनि 12/04/2033 बुध 29/05/2033 केतु 17/06/2033 शुक्र 10/08/2033
राहु - चंद्र 10/08/2033 09/02/2035	राहु - मंगल 09/02/2035 28/02/2036	गुरु - गुरु 28/02/2036 17/04/2038	गुरु - शनि 17/04/2038 28/10/2040	गुरु - बुध 28/10/2040 03/02/2043
चंद्र 25/09/2033 मंगल 27/10/2033 राहु 17/01/2034 गुरु 31/03/2034 शनि 26/06/2034 बुध 12/09/2034 केतु 14/10/2034 शुक्र 13/01/2035 सूर्य 09/02/2035	मंगल 04/03/2035 राहु 30/04/2035 गुरु 20/06/2035 शनि 20/08/2035 बुध 13/10/2035 केतु 05/11/2035 शुक्र 08/01/2036 सूर्य 27/01/2036 चंद्र 28/02/2036	गुरु 11/06/2036 शनि 12/10/2036 बुध 31/01/2037 केतु 17/03/2037 शुक्र 25/07/2037 सूर्य 02/09/2037 चंद्र 06/11/2037 मंगल 21/12/2037 राहु 17/04/2038	शनि 11/09/2038 बुध 20/01/2039 केतु 15/03/2039 शुक्र 16/08/2039 सूर्य 01/10/2039 चंद्र 17/12/2039 मंगल 09/02/2040 राहु 27/06/2040 गुरु 28/10/2040	बुध 23/02/2041 केतु 12/04/2041 शुक्र 28/08/2041 सूर्य 08/10/2041 चंद्र 16/12/2041 मंगल 03/02/2042 राहु 07/06/2042 गुरु 25/09/2042 शनि 03/02/2043
गुरु - केतु 03/02/2043 10/01/2044	गुरु - शुक्र 10/01/2044 10/09/2046	गुरु - सूर्य 10/09/2046 29/06/2047	गुरु - चंद्र 29/06/2047 28/10/2048	गुरु - मंगल 28/10/2048 04/10/2049
केतु 23/02/2043 शुक्र 21/04/2043 सूर्य 08/05/2043 चंद्र 05/06/2043 मंगल 25/06/2043 राहु 15/08/2043 गुरु 30/09/2043 शनि 23/11/2043 बुध 10/01/2044	शुक्र 20/06/2044 सूर्य 08/08/2044 चंद्र 28/10/2044 मंगल 24/12/2044 राहु 19/05/2045 गुरु 26/09/2045 शनि 27/02/2046 बुध 15/07/2046 केतु 10/09/2046	सूर्य 25/09/2046 चंद्र 19/10/2046 मंगल 05/11/2046 राहु 19/12/2046 गुरु 27/01/2047 शनि 14/03/2047 बुध 25/04/2047 केतु 12/05/2047 शुक्र 29/06/2047	चंद्र 09/08/2047 मंगल 06/09/2047 राहु 18/11/2047 गुरु 22/01/2048 शनि 08/04/2048 बुध 16/06/2048 केतु 15/07/2048 शुक्र 04/10/2048 सूर्य 28/10/2048	मंगल 17/11/2048 राहु 07/01/2049 गुरु 22/02/2049 शनि 17/04/2049 बुध 04/06/2049 केतु 24/06/2049 शुक्र 20/08/2049 सूर्य 06/09/2049 चंद्र 04/10/2049



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु 04/10/2049 28/02/2052	शनि - शनि 28/02/2052 03/03/2055	शनि - बुध 03/03/2055 10/11/2057	शनि - केतु 10/11/2057 20/12/2058	शनि - शुक्र 20/12/2058 18/02/2062
राहु 13/02/2050 गुरु 10/06/2050 शनि 26/10/2050 बुध 28/02/2051 केतु 20/04/2051 शुक्र 13/09/2051 सूर्य 27/10/2051 चंद्र 08/01/2052 मंगल 28/02/2052	शनि 20/08/2052 बुध 22/01/2053 केतु 28/03/2053 शुक्र 27/09/2053 सूर्य 21/11/2053 चंद्र 20/02/2054 मंगल 25/04/2054 राहु 07/10/2054 गुरु 03/03/2055	बुध 20/07/2055 केतु 15/09/2055 शुक्र 26/02/2056 सूर्य 15/04/2056 चंद्र 06/07/2056 मंगल 02/09/2056 राहु 27/01/2057 गुरु 07/06/2057 शनि 10/11/2057	केतु 03/12/2057 शुक्र 09/02/2058 सूर्य 01/03/2058 चंद्र 04/04/2058 मंगल 27/04/2058 राहु 27/06/2058 गुरु 20/08/2058 शनि 23/10/2058 बुध 20/12/2058	शुक्र 30/06/2059 सूर्य 27/08/2059 चंद्र 02/12/2059 मंगल 07/02/2060 राहु 30/07/2060 गुरु 31/12/2060 शनि 02/07/2061 बुध 13/12/2061 केतु 18/02/2062
शनि - सूर्य 18/02/2062 31/01/2063	शनि - चंद्र 31/01/2063 01/09/2064	शनि - मंगल 01/09/2064 10/10/2065	शनि - राहु 10/10/2065 16/08/2068	शनि - गुरु 16/08/2068 28/02/2071
सूर्य 08/03/2062 चंद्र 05/04/2062 मंगल 26/04/2062 राहु 17/06/2062 गुरु 02/08/2062 शनि 26/09/2062 बुध 14/11/2062 केतु 04/12/2062 शुक्र 31/01/2063	चंद्र 20/03/2063 मंगल 23/04/2063 राहु 19/07/2063 गुरु 04/10/2063 शनि 04/01/2064 बुध 25/03/2064 केतु 28/04/2064 शुक्र 03/08/2064 सूर्य 01/09/2064	मंगल 24/09/2064 राहु 24/11/2064 गुरु 17/01/2065 शनि 22/03/2065 बुध 18/05/2065 केतु 11/06/2065 शुक्र 17/08/2065 सूर्य 07/09/2065 चंद्र 10/10/2065	राहु 15/03/2066 गुरु 01/08/2066 शनि 13/01/2067 बुध 10/06/2067 केतु 09/08/2067 शुक्र 30/01/2068 सूर्य 22/03/2068 चंद्र 17/06/2068 मंगल 16/08/2068	गुरु 18/12/2068 शनि 13/05/2069 बुध 21/09/2069 केतु 14/11/2069 शुक्र 17/04/2070 सूर्य 03/06/2070 चंद्र 19/08/2070 मंगल 12/10/2070 राहु 28/02/2071
बुध - बुध 28/02/2071 26/07/2073	बुध - केतु 26/07/2073 23/07/2074	बुध - शुक्र 23/07/2074 23/05/2077	बुध - सूर्य 23/05/2077 30/03/2078	बुध - चंद्र 30/03/2078 29/08/2079
बुध 02/07/2071 केतु 23/08/2071 शुक्र 16/01/2072 सूर्य 29/02/2072 चंद्र 12/05/2072 मंगल 03/07/2072 राहु 12/11/2072 गुरु 09/03/2073 शनि 26/07/2073	केतु 16/08/2073 शुक्र 16/10/2073 सूर्य 03/11/2073 चंद्र 03/12/2073 मंगल 24/12/2073 राहु 17/02/2074 गुरु 06/04/2074 शनि 02/06/2074 बुध 23/07/2074	शुक्र 12/01/2075 सूर्य 05/03/2075 चंद्र 30/05/2075 मंगल 29/07/2075 राहु 01/01/2076 गुरु 18/05/2076 शनि 28/10/2076 बुध 24/03/2077 केतु 23/05/2077	सूर्य 08/06/2077 चंद्र 04/07/2077 मंगल 22/07/2077 राहु 06/09/2077 गुरु 18/10/2077 शनि 06/12/2077 बुध 19/01/2078 केतु 06/02/2078 शुक्र 30/03/2078	चंद्र 12/05/2078 मंगल 11/06/2078 राहु 28/08/2078 गुरु 05/11/2078 शनि 26/01/2079 बुध 09/04/2079 केतु 09/05/2079 शुक्र 03/08/2079 सूर्य 29/08/2079

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

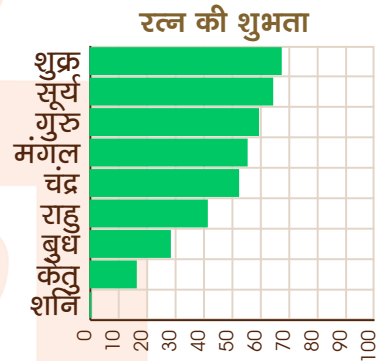


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	67%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	64%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	59%	दम्पति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मूंगा	मंगल	55%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, सुख
मोती	चंद्र	52%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
गोमेद	राहु	41%	रोग, दुर्घटना
पन्ना	बुध	28%	दुर्घटना, हानि, धन हानि
लहसुनिया	केतु	16%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	27/02/2001	77%	58%	61%	28%	66%	55%	0%	16%	0%
चंद्र	28/02/2011	70%	64%	55%	41%	59%	67%	0%	16%	0%
मंगल	27/02/2018	70%	58%	67%	3%	66%	67%	0%	16%	28%
राहु	28/02/2036	52%	29%	34%	28%	59%	73%	0%	58%	0%
गुरु	28/02/2052	70%	58%	61%	3%	72%	55%	0%	41%	16%
शनि	28/02/2071	52%	29%	34%	41%	59%	73%	0%	52%	0%
बुध	28/02/2088	70%	29%	55%	52%	59%	73%	0%	41%	16%
केतु	28/02/2095	52%	29%	61%	28%	59%	73%	0%	16%	41%
शुक्र	01/03/2115	52%	29%	55%	41%	59%	80%	0%	52%	28%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

बदनामी
व्यावसायिक उन्नति
धनार्जन
बुरा स्वास्थ्य
सन्तति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल जन्म कुंडली में अष्टम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु आपकी कुण्डली में शास्त्रानुसार मंगली दोष समाप्त हो जाता है अतः आपको इसके अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी विघ्न बाधाओं के समाप्त होंगे। यदा कदा अल्प मात्रा में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं होगी। साथ ही इसके शुभ प्रभाव से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे एवं भाई बहनों का भी पूर्ण सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपना सम्पूर्ण जीवन सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ होगा परन्तु इसके प्रभाव से विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। विवाह अत्यन्त ही सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा तथा इसमें आपको किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं विघ्नों का सामना नहीं करना पड़ेगा। शादी के पश्चात भी जीवन सुखी रहेगा लेकिन यदा कदा इससे पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा परन्तु आपके सभी कार्य व्यवधान रहित सम्पन्न होते रहेंगे। आप जीवन में पूर्ण सुख तथा आनन्द की अनुभूति करेंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके सभी सांसारिक व्यापारिक तथा परिवारिक कार्य प्रायः निर्विघ्न रूप से समाप्त होंगे। अपने सभी कार्यों में आप सफलता प्राप्त करते रहेंगे। कभी कभी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे तथा जीवन में आर्थिक रूप से प्रायः सुदृढ़ रहेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप उच्च शिक्षा को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। तथापि यदा कदा कार्य में बाधाएं उपस्थित

होंगी परन्तु आप उसे दूर करने में सफल होंगे। साथ ही आपका पारिवारिक जीवन भी सुख एवं शान्ति से परिपूर्ण रहेगा। तृतीय भाव पर भी मंगल की दृष्टि होने से आप भाई बहनों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में उनसे भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सौभाग्यशाली सिद्ध होंगे। मंगल के इस शुभ प्रभाव से आपका जीवन सुखद एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी गैरमांगलिक या मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका उचित नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप विवाह करेंगे तो आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। सभी प्रकार से आप जीवन में पूर्ण सौभाग्य, धनैश्वर्य एवं मान सम्मान प्राप्त करके समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में यश अर्जित करेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म पत्री मिलान के समय अष्टम भाव में ही यदि कन्या की जन्म कुण्डली में मंगल स्थित हो तो इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल होने से आपके जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा पत्नी का स्वास्थ्य भी खराब रहेगा। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ प्रभावों में वृद्धि करेगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सावधानी पूर्वक सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे जीवन में किसी भी प्रकार से अशान्ति या कष्ट उत्पन्न न हो सके।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का हास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

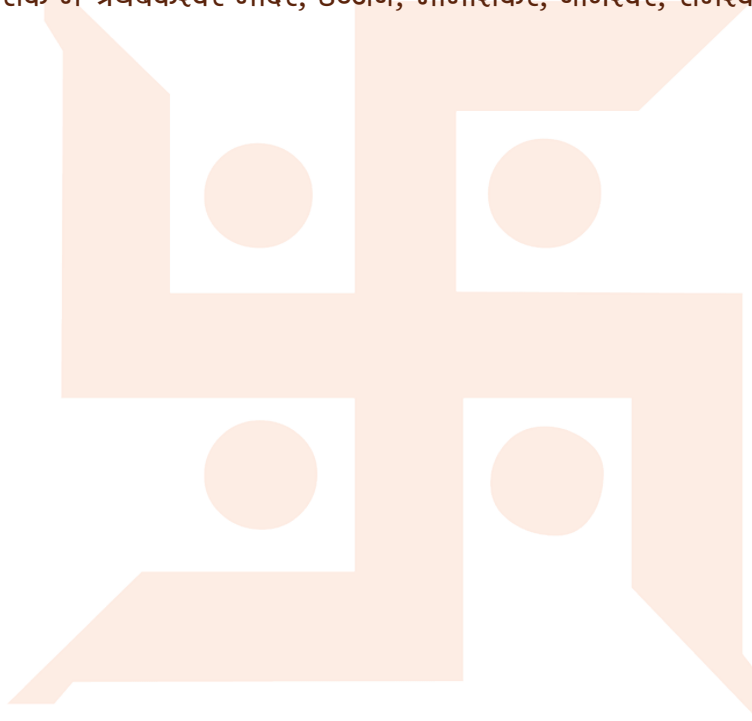
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण

और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी हैं। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुड़े रहते हैं। आप मानसिक और



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता है। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता है।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पत्ति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता है, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती है। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता है।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा है। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती है। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते हैं।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते



FUTUREPOINT
Astro Solutions



हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित हैं। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़ोतरी हो रही है।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विघ्न बाधाएं दे सकता है। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता है। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक साहसी तेजस्वी तथा पराक्रमी होते हैं। आत्मविश्वास की उनमें प्रधानता रहती है एवं स्वबुद्धि तथा पुरुषार्थ से अपने सांसारिक महत्व के शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करते हैं जिससे ये धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों को प्राप्त करते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। धर्म के प्रति इनकी श्रद्धा रहती है तथा परोपकार संबंधी कार्यों में भी तन मन धन से अपना सहयोग प्रदान करते हैं। साथ ही ये लोग विश्वास के पात्र भी होते हैं। राजनीति, व्यापार या कार्य क्षेत्र में ये किसी सम्मानित पद की प्राप्ति करते हैं जिससे सम्मान प्रतिष्ठा तथा यश मिलता रहता है। इसके अतिरिक्त इनमें नेतृत्व की क्षमता भी विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आप में निडरता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को आप निर्भीकता तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही भौतिक सुखैश्वर्य एवं उपकरणों को अर्जित करके आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

जीवन में अवसरानुकूल आप उदारता एवं पराक्रम के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। स्वबुद्धि एवं पराक्रम के द्वारा आप उन्नति प्राप्त करेंगे प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफल होंगे एवं आपके प्रतिद्वन्दी तथा शत्रु आपसे प्रभावित होंगे जिससे कार्यक्षेत्र में आपको इच्छित प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होगी। परन्तु आपकी प्रवृत्ति अन्य जनों को अपने से तुच्छ समझने की भी रहेगी। अतः इससे आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सतर्क रहें।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा यदा कदा मानसिक रूप से भी अशांति की अनुभूति करेंगे। आप में तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा परन्तु अनावश्यक उग्रता या क्रोध के भाव का आप प्रदर्शन करेंगे। अतः क्रोध के भाव की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें। धनैश्वर्य से आप युक्त होंगे तथा मध्यम अवस्था में परिश्रम करके सुखैश्वर्य एवं भौतिक उपकरणों को अर्जित करेंगे। स्त्री के प्रति आपका आकर्षण रहेगा तथा अधिकांश कार्यों को उन्हीं के कहने पर सम्पन्न करेंगे।

यद्यपि स्वभाविक रूप से आप गम्भीर तथा धैर्यशाली व्यक्ति होंगे तथापि चंचलता की भी कमी नहीं होगी जिससे कार्यों को करने या निर्णय लेने में आप शीघ्रता का परिचय देंगे इससे आपको अनावश्यक व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। भौतिक पदार्थों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा परिश्रमपूर्वक इनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे तथा इन्हें अर्जित करके आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे। आपका मित्रता का क्षेत्र अल्प रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में उनसे सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही दुष्टमित्रों से आपको सावधान भी रहना चाहिए। इस प्रकार आप पराक्रमी तेजस्वी तथा परिश्रमी पुरुष होकर जीवन में सफलताएं प्राप्त करेंगे तथा आनंदपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आमंत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्यमान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगे।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते हैं। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगे तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे लेकिन संबंधों में औपचारिकता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होते रहेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रुचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप हमेशा रुचिशील रहेंगे तथा इसके लिए प्रयत्न भी करेंगे जिसमें आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च श्रेणी के धार्मिक दार्शनिक तथा ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा धर्म तथा शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकांश सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचार धारा के व्यक्ति आत्म विश्वासी तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करने वाले होंगे तथा इसमें आपको श्रद्धाति तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी सीखने की शक्ति अत्यंत ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही आप नवीन विचारों का सृजन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही आपका अन्तर्ज्ञान हमेशा सही रहेगा।

आपकी पत्नी बुद्धिमान होगी तथा वे शांत स्वभाव की चतुर महिला होंगी। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समता के भाव की उत्पत्ति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित आदर एवं श्रद्धाति प्राप्त करेंगे। आपके साथ में वह स्थितियों को अनुकूल बनाने में समर्थ रहेंगी। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी तथा उनका स्वभाव भी उत्तम रहेगा। साथ ही वे बुद्धिमान होंगे एवं अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। वृद्धावस्था में आपकी वे श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे वैदिक ज्ञान या ज्योतिष पर भी आपकी श्रद्धा रहेगी इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सुसम्पन्न, शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाले तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा शुक्र भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया कुम्भ राशि की सप्तम भाव की स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव व्ययशील पित प्रकृति कुल में श्रेष्ठ एवं सेवकों से युक्त होता है शुक्र के प्रभाव से वह सुशील आधुनिक विचारों से युक्त एवं संगीत तथा कला का प्रेमी भी होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा आधुनिक विचारों से युक्त रहेंगी एवं पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करने में प्रवृत्त होंगी कुम्भ राशि के प्रभाव से वह यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी परन्तु अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण सजग रहेंगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने में भी दक्ष होंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौरवर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शुक्र के प्रभाव से उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा एवं अंग प्रत्यंगों में पुष्टता तथा सुडौलता होगी तथा शारीरिक संरचना में आकर्षण होगा इससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व भी अन्य जनों को प्रभावित करेगा। संगीत एवं कला के प्रति उनकी समर्पण की भावना होगी तथा अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगी। इसके अतिरिक्त भौतिक एवं सुंदर वस्तुओं के प्रति मन में आकर्षण रहेगा तथा इनका संग्रह करने में प्रवृत्त होंगी।

आपका विवाह विज्ञापन या किसी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथापि शुक्र के प्रभाव से आप अपनी इच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं समर्पण का भाव होगा आप एक दूसरे के मनोभावों का पूर्ण आदर करेंगे तथा सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे। आप दोनों शिक्षित होंगे तथा जीवन में मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी।

आपका विवाह किसी अच्छे धनाढ्य एवं समृद्ध परिवार में होगा तथा विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा आप पर उनका पूर्ण विश्वास रहेगा जिससे भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा अन्य सहयोग मिलते रहेंगे।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति सेवा का भाव होगा एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्ब्यवहार से प्रसन्न रखेंगी तथा वे उनको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी

करने से आपको वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही स्वोच्चराशि में चन्द्रमा भी दशम भाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमि तत्व एवं चन्द्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से भी युक्त होगा तथा आप समय समय पर इसमें वांछित परिवर्तन भी करते रहेंगे लेकिन इन परिवर्तनों से आपको इच्छित लाभ की भी प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जल से उत्पन्न पदार्थों यथा शंख, मोती, प्रवाल आदि के व्यापार से, मछली का व्यापार मिट्टी के खिलौने, वालू, ईट आदि के कार्य से, इलैक्ट्रॉनिक उपकरण, सफेद एवं आलंकारिक वस्त्रों का व्यापार, द्रव्य पदार्थों यथा दूध- धी-दही से वांछित लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही रेशमी कपड़ों के कार्य से भी इच्छित धनार्जन होगा। अतः इच्छित लाभ एवं उन्नति के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार प्रारंभ करना चाहिए। इससे आपके उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दशमभाव में उच्च राशि में चन्द्रमा के प्रभाव से आप जीवन में वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। साथ ही किसी उच्चपद को प्राप्त करने में भी समर्थ होंगे। अपने क्षेत्र में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में दूर दूर तक आपका यश व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी कोई महत्वपूर्ण पदाधिकारी मनोनीत होंगे इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में समाज में माने जाएंगे।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व से युक्त बुद्धिमान शिक्षित एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे। उनका स्वभाव शांत तथा गंभीर होगा तथा लोगों की भलाई के लिए कार्यों को करने में वे तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा तथा आपकी उन्नति एवं सफलता में वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही उनके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आप मान सम्मान भी अर्जित करेंगे। आप भी अपने उत्तम एवं बुद्धिमतापूर्ण कार्यों से उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही परस्पर सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता भी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप उनकी आज्ञा का पालन करने में भी तत्पर होंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि अष्टम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुदशम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि एकादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि एकादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला परिणाम देने वाला रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए नई योजना भी बनाएंगे जिससे व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी तथा इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

29 मार्च के बाद अष्टम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्यों में कुछ रुकावटें आ सकती हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी संभाल लेंगे। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। एकादश स्थान के गुरुआय बढ़ा सकते हैं। आपको बड़े लोगों या वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न एवं आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा परन्तु आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

मई के बाद एकादश स्थान में गुरुके गोचरीय प्रभाव से रुका हुआ धन मिल सकता है, साथ ही आपके धनागम में भी वृद्धि होगी, जिससे आप उचित बचत करने में सफल रहेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद प्रेम प्रसंग में सफलता प्राप्त होगी। तृतीय स्थान में गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अत्यधिक परिश्रमी होंगे एवं अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य ही रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से मौसम जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। मानसिक चिंता जैसी छोटी मोटी परेशानियां होती रहेंगी।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहें। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आप का स्वास्थ्य पूर्ण रूप से अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता मिल सकती है।

मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्षारम्भ में आप जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। मई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। यात्रा के अंतराल में या वाहनादि चलते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे, परन्तु मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढेगा। आप भगवान की पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कार्य संपन्न करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार हनुमान जी को चोला चढाएं एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपको कार्य में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल में जल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न ही जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है। जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अन्तराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुविधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूबर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नहीं आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्ज इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नहीं रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती है।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने में आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्च भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com